26 अपने बच्चे के सपने को जीना .....



वाणी ब्रह्मचारी

अकसर मुझसे यह सवाल पूछा जाता है कि, "आप दोनों वैज्ञानिक हैं, फिर आपके बच्चों ने विज्ञान विषय क्यों नहीं चुना? और ऐसा कैसे कि जब उन्होंने विज्ञान से हटकर कला का पाठ्यक्रम जैसे कि विजुअल कम्युनिकेशन या डिजाइन को व्यवसाय के रूप में चुना तब आपको कोई फर्क नहीं पड़ा?" लेकिन हमारे लिए यह रचनात्मक खोज की बात थी। वास्तव में, व्यवसाय के इन विकल्पों में, वैज्ञानिक अनुसन्धान के विपरीत, हम ऐसे योगदान दे सकते हैं जिनके साथ बहुत से लोग सम्बन्ध जोड़ सकते हैं।

अब अगर आप मुझसे पूछें कि क्या मेरे बेटों और हमारा यह निर्णय सोच–समझकर लिया हुआ निर्णय था तो मेरा जवाब आंशिक रूप से हाँ होगा। एक बात तो यह थी कि मेरा बच्चा डिस्लेक्सिया से ग्रस्त है और उसे लकड़ी और तार के साथ काम करना अच्छा लगता था। ताँबे के तारों का उपयोग करके आभूषण बनाना उसके अनेक विशेष कौशलों में से एक कौशल था। इन प्रयासों में उसे कई प्रयोग भी करने पड़ते थे जिनके परिणाम स्वरूप हमारे अपार्टमेंट की बिजली चली जाया करती थी, जबकि अन्य अपार्टमेंटों में बिजली रहती थी !

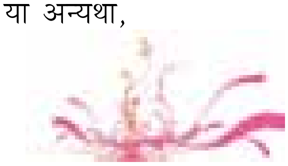
जब हम दिल्ली गए तो कला को एक विषय के रूप में लेने का निर्णय आसान हो गया क्योंकि यहाँ बंगलौर की तरह यह स्थिति नहीं थी कि "या तो मेडिकल या इंजीनियरिंग करो या मरो।" दिल्ली विश्वविद्यालय में, हर वर्ष, स्नातक कोर्सों में प्रवेश के लिए अंकों की उच्चतम सीमा वाणिज्य के विषयों के लिए है, विज्ञान के लिए नहीं। यह एक आम धारणा है कि कला तो सहज स्वाभाविक है, ("क्या कलाकार बनने के लिए वास्तव में प्रशिक्षण की जरूरत है?") और इसलिए यह प्राथमिक करियर विषय के साथ अतिरिक्त रूप में होनी चाहिए। हाईस्कूल में जब मेरे बेटे ने कला को एक विषय के रूप में लेने का निर्णय लिया तो उसकी अध्यापिका उलझन में पड़ गईं। उन्होंने उसे चेतावनी दी कि यह आसान नहीं है और उसे इस कोर्स में प्रवेश देने के पहले वे कुछ समय तक उस पर नजर रखेंगी और उसके काम पर ध्यान देंगी। तो कला में कोर्स करना भी एक डिफॉल्ट विकल्प हो सकता था। चूँकि उन्होंने उसमें सहज झुकाव और काम को अलग तरीके से करने की क्षमता देखी थी, इसलिए उन्हें उसे औपचारिक प्रशिक्षण देने में प्रसन्नता हुई। उसने अपने बोर्ड के प्रोजेक्ट के लिए पोर्सलिन के टुकड़ों से सजा हुआ लकड़ी का जो शेल्फ बनाया था, वह आज भी हमारे बैठक की शोभा बढ़ाता है। उसने किसी अन्य पेशे की तरह ही कला को बड़े स्वाभाविक रूप से पेशे के रूप में जारी रखा।

मुझे एक चुनौती का और सामना करना पड़ता है–जो है लोगों को उसके काम के बारे में बताना। अगर मैं यह कहती कि मेरा बेटा सॉफ्टवेयर इंजीनियर है तो इसे समझने में किसी को कोई समस्या नहीं होती, मेरे बेटे की चिन्ता करने वाले मेरे मित्र/रिश्तेदार यह जानकर सन्तुष्ट हो जाते कि वह किस बहुराष्ट्रीय कम्पनी में काम करता है, बिना इस बात की चिन्ता किए कि वह कौन–से सॉफ्टवेयर बनाता है ! लेकिन अगर मैं यह कहती कि मेरा बेटा कला और विजुअल कम्युनिकेशन से जुड़ा हुआ है तो वे तत्काल निष्कर्ष निकाल लेते कि, "ओह, तो वह विज्ञापन कम्पनी में है।" लेकिन मैं जानती हूँ कि मुझे इसे यहीं नहीं छोड़ देना चाहिए क्योंकि रचनात्मक व्यक्तियों में अपने पेशे को लेकर जो गहरा संस्कार होता है उसे अकसर उतनी प्रशंसा नहीं मिलती जितनी मिलनी चाहिए। इसलिए मैं उसके काम को और विस्तार से बताती हूँ लेकिन मैं जानती हूँ कि मैं इस काम में विफल रहती हूँ क्योंकि मेरा यह वर्णन न तो उन्हें सन्तुष्ट कर पाता है और न ही मुझे !

कई बार लोग इस बात की सराहना करते हैं कि हम पूर्वाग्रह रहित और खुले दिमाग के हैं क्योंकि हमने पेशे के रूप में अपने बेटे को 'कला' को चुनने दिया। लेकिन कभी–कभी कुछ स्थितियों में मुझे लगता है कि अगर यही बात उनके बच्चों के बारे में होती तो शायद वे उसका सामना इस तरह से न करते। ठीक वैसे ही जैसे पुरुषों का यह घिसा–पिटा रवैया कि वे अपनी पत्नी के अलावा अन्य महिलाओं के 'स्मार्ट तरीके और अति महत्त्वाकांक्षी प्रवृत्ति' की तारीफ करते हैं (यही विशेषता अगर उनकी पत्नी/बहू में हो तो उसे वे अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कहते हैं)।

अगर आप मुझसे यह पूछें कि क्या मैं उसके पेशे से ईर्ष्या करती हूँ, तो मैं कहूँगी कि मैं उसके पाठ्यक्रम से निश्चित रूप से ईर्ष्या करती हूँ। उसके मॉड्यूलर कोर्स और आकलन के मानदण्ड मेरे विद्यार्थी जीवन के कोर्स से कहीं अधिक मजेदार थे। जब उसने कला, डिजाइन और तकनीक में पाँच वर्षीय डिप्लोमा कोर्स करना शुरू किया तो मुझे उसकी 'नौकरी की सुरक्षा' के बारे में चिन्ता हुई। मैं ऐसे परिवार में पली–बढ़ी थी जिसमें मेरे पिता और भाइयों के साथ–साथ मेरी व मेरे पति की नौकरी भी पेंशन वाली थी, तो लगा कि उसकी नौकरी में तो हर दिन अनिश्चितताएँ हैं। यहाँ पर मैं यह जरूर कहना चाहूँगी कि मेरे पति इस बात को लेकर कोई खास चिन्तित नहीं थे। लेकिन समय के साथ–साथ मुझे एहसास हुआ है कि यह कई प्रकार से समृद्ध करता है और जैसा जीवन हमने जिया उसके अलावा भी जीने के कई तरीके हैं। मुझे इस बात का गहन बोध है कि अपनी सामाजिक स्थिति, वित्तीय या अन्यथा, के कारण मैं इस स्थिति को अपना सकी हूँ।

इससे मेरे सामने एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विचार आता है जिसके कारण बच्चा या उसका परिवार कला को पेशे के रूप में नहीं चुनते। इस पेशे में निरन्तर सफल रह पाना न केवल अपनी खुद की प्रतिभा,साहस और धैर्य से जुड़ा हुआ है बल्कि यह अवसर, प्रदर्शन और सम्पर्क पर भी निर्भर है। विश्वविद्यालय में मैंने अनुभव किया है कि स्नातकोत्तर कोर्स के विद्यार्थियों के हर बैच में एक या दो विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनका मन बायोमेडिकल साइंसेज में नहीं बल्कि वन्य जीवन की फोटोग्राफी या पेन्टिंग और चित्रकला में लगता है। एक सेमेस्टर के दो–तीन हफ्तों में मैं यह साफ देख पाती हूँ कि कोई विद्यार्थी इस कोर्स में जो कुछ कर रहा है, उसमें उससे कहीं अधिक करने की योग्यता है। जब मैं उनसे इस बारे में और अधिक पूछताछ करती हूँ तो कुछ इस तरह का बयान सामने आता है–"मुझे यह कोर्स पसन्द नहीं था। मुझे तो देहरादून के भारतीय वन्य जीवन संस्थान में प्रवेश मिल गया था। लेकिन मेरे माता–पिता को लगा कि उस कोर्स में कुछ नहीं धरा और उसमें कोई गुंजाइश नहीं है।" बेशक, पिछले कुछ वर्षों में भारत में पेशों के विकल्प में विस्तार हुआ है, लेकिन कोर्सों के बारे में जागरूकता और कोर्स के बाद उपलब्ध अवसरों के बारे में और अधिक प्रचार की जरूरत है; न केवल इन संस्थानों के लिए बल्कि माता–पिता और बच्चों के लिए भी ताकि वे सुरक्षित महसूस करें और उन्हें पूरे विश्वास के साथ अपने सपनों को पूरा करने की स्वतंत्रता मिले।



__वाणी ब्रह्मचारी__ दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ.बी.आर.अम्बेडकर जैव चिकित्सा अनुसन्धान केन्द्र में प्रोफेसर हैं। उनके पुत्र सौरव ने नेशनल ज्योग्राफिक और फॉक्स हिस्ट्री के साथ काम किया है। सम्प्रति वे राजीव सेठी सीनोग्राफर्स एवं एशियन हेरिटेज फाउण्डेशन के साथ काम करते हैं। वाणी ब्रह्मचारी से vani.brahmachari@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। ***अनुवाद:*** *नलिनी रावल*